# क़ुरआन के उतरने का मक़सद

## एक और अकेले सच्चे ख़ुदा पर ईमान लाना

''तुम्हारा ख़ुदा एक ही ख़ुदा है । उस दयावान और करुणामय ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है ।'' (क़ुरआन, 2 : 163)

पूरे क़ुरआन में सबसे महत्वपूर्ण विषय जो बयान हुआ है वह है, एक और अकेले सच्चे ख़ुदा पर ईमान । उस ख़ुदा ने हमें बताया है कि उसका कोई साझीदार नहीं, न उसका कोई बेटा है और न ही उसके बराबर कोई है । और उसके सिवा कोई ऐसा नही है जो उसका स्थान ले सके या उसके जैसा हो सके। क़ुरआन इस बात का निषेध करता है कि ख़ुदा इनसान का रूप ले सकता है , क्योंकि इससे ख़ुदा की शक्तियाँ और गुण सीमित हो जाते हैं ।

## तमाम झूठे ख़ुदाओं का निषेध

''और तुम सब अल्लाह की उपासना करो, उसके साथ किसी को साझी न बनाओ । (क़ुरआन, 4 : 36) जब अल्लाह एक और अकेला है और वही उपासना और इबादत के लायक़ है तो तमाम झूठे ख़ुदाओं का निरस्त कर दिया जाना आवश्यक है । क़ुरआन भी इस बात को रद्द करता है कि ख़ुदा के सिवा किसी इनसान के अन्दर ईश्वरीय गुण हो सकते हैं ।

## पहले लोगों के क़िस्से सुनना

क़ुरआन के अन्दर बहुत-से किस्से हैं लाभप्रद शिक्षाएँ है, इन क़िस्सों में पिछले नबियों, जैसे आदम, नूह, इबराहीम, ईसा और मूसा (इन सब पर ईश्वर की कृपा हो ) के क़िस्से शामिल हैं । इन क़िस्सों के बारे में अल्लाह कहता है कि-

''पहले के लोगों के इन क़िस्सो में बुध्दि और चेतनावालों के लिए शिक्षाप्रद सामग्री है।'' (क़ुरआन, 12 : 111)

## हम सबको आख़िरत के दिन की याद दिलाना

यह महान पुस्तक हमें याद दिलाती है कि हर एक को मौत का मज़ा चखना है और फिर हर एक से दुनिया में किए गए कामों और बातों का हिसाब लिया जाएगा । (क़ुरआन में है कि- )

''क़ियामत के दिन हम ठीक-ठीक तौलनेवाले तराज़ू रख देंगे, फिर किसी व्यक्ति पर कण-भर जुल्म न होगा । जिसका राई के दाने के बराबर भी कुछ किया-धरा होगा वह हम सामने ला देंगे .... (क़ुरआन , 21 : 47)

## ज़िन्दगी के मक़सद को पूरा करना

क़ुरआन महत्वपूर्ण रूप से कहता है कि इनसान की ज़िन्दगी का मक़सद एक ख़ुदा की बन्दगी करना और उसके बताए हुए रास्ते के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना है । इस्लाम में 'इबादत' एक व्यापक पारिभाषिक शब्द है जिसमें इनसान की कथनी और करनी सब आ जाती है । इसका मतलब यह है कि इनसान ऐसे काम करे और केवल ऐसी बातें कहे जिनसे अल्लाह ख़ुश होता है । इसलिए जिन बातों को करने का हुक्म अल्लाह ने दिया है उन्हे करना अल्लाह की इबादत है । यदि कोई ऐसा कर रहा है तो इसका मतलब है कि वह अपनी जिन्दगी के मक़सद को पूरा कर रहा है । इबादत के यह उदाहरण है :

**नमाज़ :** ''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, (अल्लाह के आगे) झुको और सजदा करो, और अपने रब की बन्दगी करो, और अच्छे कर्म करो, इसी से उम्मीद की जा सकती है कि तुमको सफलता प्राप्त होगी'' (क़ुरआन , 22 : 77 )

**ज़कात :** ..... अपने माल ख़र्च करो, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है । जो अपने दिल की तंगी से सुरक्षित रह गए बस वही सफलता प्राप्त करनेवाले हें '' (क़ुरआन, 64 : 16)

**ईमानदार बनो :** '' असत्य का रंग चढ़ाकर सत्य को सन्दिग्ध न बनाओ और न जानते-बूझते सत्य को छिपाने का प्रयास करो । '' (क़ुरआन 2 : 42)

सुशील बनो और पाकीज़गी अपनाओ (To be Modest) '' ऐ नबी, ईमानवाले पुरुषों से कहो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें, यह उनके लिए ज्यादा पाकीज़ा तरीक़ा है, जो कुछ वे करते हैं अल्लाह को उसकी ख़बर रहती है .... और ईमानवाली औरतों से कहो कि अपनी निगाहें बचाकर रखे और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें । '' (क़ुरआन, 24 : 30-31)

शुक्रकुज़ार (कृतज्ञ) बनो : '' अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला इस हालत में कि तुम कुछ न जानते थे । उसने तुम्हें कान दिए, आँखें दीं सोचनेवाले दिल दिए, कि तुम शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बनो ।'' (क़ुरआन , 16 : 16)

**इनसाफ़ करनेवाले (न्यायशील) बनो :** '' ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, इनसाफ़ के ध्वजावाहक और अल्लाह के लिए गवाह बनो, यह भी तुम्हारा इनसाफ़ गवाही ख़ुद तुम्हारे अपने या तुम्हारे माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न पड़ती हो । ''(क़ुरआन 4: 135)

**सब्र करनेवाले (धैर्यवान) बनो :** '' सब्र कर, अल्लाह नेकी करनेवालों का बदला कभी अकारत नहीं करता । '' (क़ुरआन 11 : 115)

नेक बनो : '' जो लोग ईमान लाएँ और अच्छे काम करें, अल्लाह ने उनसे वादा किया है कि उन को माफ़ कर दिया जाएगा और उन्हें बड़ा बदला मिलेगा ।(क़ुरआन - 5 : 9 )

**निष्कर्ष :** सारंश यह है कि क़ुरआन इनसान को इस बात की शिक्षा देता है कि एक सच्चे ख़ुदा की इबादत किस तरह की जाए , ताकि ज़िन्दगी के मक़सद को पूरा किया जाए और इस दुनिया और इस दुनिया के बाद की ज़िन्दगी को कामयाब बनाया जाए ।

''(ऐ नबी) हमने सारे इनसानों के लिए यह किताब हक के साथ तुम पर उतार दी है । जो सीधा मार्ग अपनाएगा अपने लिए अपनाएगा और जो भटकेगा उसके भटकने का वबाल उसी पर होगा, तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो ।'' (क़ुरआन 39: 41)

इस किताब से बैर न रखें, कृपया अपनी ज़िन्दगी में एक बार ज़रूर इस महान किताब को पढें ।


हमसे सम्पर्क करें

IIC

इस्लामिक इन्फ़ॉरमेशन सेंटर

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath


इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने हेतु सम्पर्क करें


Toll Free 1800 572 3000

040 - 6832 7832

www.discovertruepath.com

You Tube : DiscoverTruePath


# क़ुरआन

## ईश्वर की ओर से अन्तिम ग्रन्थ

# क़ुरआन क्या है ?

## ईश्वरीय वाणि

क़ुरआन सर्वशक्तिमान ईश्वर (अरबी में अल्लाह) के यथातथ्य (Literal) शब्दों का संग्रह है, जो कि मुहम्मद (स) पर जिब्रईल ईशदूत द्वारा अवतरित किया गया था।

इस किताब का अवतरण अल्लाह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ की तरफ़ से है। (क़ुरआन, 39, 1)

## मानव जाति के लिए मार्गदर्शन

क़ुरआन मानव जाति के लिए मार्गदर्शन.....इसकी आयतें सत्य और असत्य का अन्तर खोलकर रख देनेवाली है। (क़ुरआन, 2, 185)

यह इनसान को सही और ग़लत के बीच फ़ैसला करने में उसका मार्गदर्शन करता है, जिसके बिना इनसान संपुर्ण रूप से घाटे में है।

## अन्तिम ग्रन्थ

क़ुरआन सर्वशक्तिमान अल्लाह की तरफ़ से अवतरित अन्तिम ग्रन्थ है और अपने से पहले आई हुई ग्रन्थों की सच्ची बातों की पुष्टि करनेवाली है तथा जो ग़लत बातें उन किताबों में मिला दी गई थीं उनको ठीक करती है।

(ऐ किताबवालो) मैंने जो किताब भेजी है, उस पर ईमान लाओ। यह उस किताब की पुष्टि में है जो तुम्हारे पास पहले से थी। (क़ुरआन, 2, 41)

## क़ुरआन किस तरह उतरा

क़ुरआन पैग़म्बर मुहम्मद (स) पर उतरा और आज उसी भाषा (अरबी) में है जिस भाषा में यह उतरा था। हालाँकि क़ुरआन के अर्थो का अनुवाद बहुत-सी भाषाओं में है।

क़ुरआन को एक ही साथ किताब की शक्ल में नही उतारा गया था, बल्कि इसका अवतरण २३ वर्षों पर फैला हुआ है।

इसका कारण यह है कि यह ज़रूरी था कि जिस तरह के हालात हों उनके अनुसार आदेश उतरती रहें ताकि क़ुरआन को सही अर्थो में समझा जा सके, अन्यथा इसकी आयतों को समझने में दुश्वारी होती।

# हम कैसे जानते हैं कि क़ुरआन ख़ुदा की तरफ़ से है ?

## सुरक्षा (Preservation)

केवल क़ुरआन ही वह धार्मिक पुस्तक है जो इतने लम्बे समय से प्रचलन में है फिर भी उसी शक्ल में है जिस शक्ल में यह मुहम्मद (स) पर अवतरित हुई थी। 1400 साल पूर्व अवतरित हुई इस किताब में न कोई चीज़ बढ़ाई गई है और न हटाई गई है और न ही इसमें कोई बदलाव हुआ है।

**हम ही ने इस ज़िक्र (यानी क़ुरआन) को उतारा है और हम ख़ुद ही इसके रक्षक हैं। (क़ुरआन, 15 : 9)**

क़ुरआन न केवल लिखित शक्ल में सुरक्षित है बल्कि मर्दों और औरतों और बच्चों के दिलों में भी सुरक्षित है। आज लाखों लोगों ने इस क़ुरआन को पूरा-पूरा याद किया हुआ है।

## वैज्ञानिक चमत्कार

क़ुरआन का आधुनिक विज्ञान के साथ कोई टकराव नहीं है, बल्कि इसको समर्थन करता है। क़ुरआन का एक नुमायाँ पहलू यह है कि इसमें ऐसी आयतें हैं जिनमें भ्रूण-विज्ञान, मौसम-विज्ञान, खगोल-विज्ञान, भुविज्ञान और समुद्र-विज्ञान आदि के बारे में बहुत-से प्राकृतिक तथ्य बयान किए गए हैं। वैज्ञानिकों ने इन तथ्यों को अविश्वसनीय तौर पर शुध्द पाया जिन्हें १४०० साल पहले बयान किया गया था।

''जल्द ही हम इनको अपनी निशनियाँ बाहरी दुनिया में भी दिखाएँगे और इनके अपने अन्तःकरण में भी, यहाँ तक कि इन पर यह बात खुल जाए कि यह क़ुरआन वास्तव है।'' (क़ुरआन, 41,53)

**''जल्द ही हम इनको अपनी निशनियाँ बाहरी दुनिया में भी दिखाएँगे और इनके अपने अन्तःकरण में भी, यहाँ तक कि इन पर यह बात खुल जाए कि यह क़ुरआन वास्तव है।'' (क़ुरआन, 41,53)**

वास्तव में बहुत-से वैज्ञानिक चमत्कार जिनको क़ुरआन ने बयान किया है उन्हें अभी हाल ही में आधुनिक विज्ञान ने तकनीकी यन्त्रों की सहायता से खोजा है।

निम्नलिखित तथयों पर विचार कीजिए :

क़ुरआन में मानव भ्रूण के विकास का पूरा विवरण दिया गया है। इन विवरणों को वैज्ञानिक समुदाय अभी कुछ समय पहले तक नहीं जान पाया था

क़ुरआन कहता है कि खगोलीय पिंड (तारे, ग्रह, चन्द्रमा इत्यादि) सब धूल के समूह (Clouds of Dust) से वुजूद में आए हैं। इससे पहले इसके बारे में लोग अनभिज्ञ थे, लेकिन अब यह ब्रहमाण्ड विज्ञान का एक निर्विवादिक सिद्धान्त है।

आधुनिक विज्ञान ने खोज की है कि समुद्र के अन्दर कुछ अवरोधक तत्व हैं जो दो समुद्रों को आपस में मिलने नहीं देते और इस तरह उनके बीच तापमान (Temprature) घनत्व (Density) और खारापन (Salinity) बना रहता है।

इन निशनियों को अल्लाह ने क़ुरआन में लगभग 1400 साल पहले बयान कर दिया था।

## क़ुरआन की विलक्षणता (uniqueness)

क़ुरआन की सुन्दरता, भाषा शैली, शान, ज्ञान, भविष्यवाणियाँ और दूसरे सम्पूर्ण गुणों को देखते हुए, इसके अवतरण से लेकर आज तक, कोई व्यक्ति एक अध्याय भी नहीं लिख सका है।

**'' और अगर तुम्हें इस बात मे सन्देह है कि यह किताब जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं, तो इस जैसी एक ही सूरा बना लाओ, अपने मत के सारेही लोगों को बुला लो, एक अल्लाह को छोड़कर बाक़ी जिस-जिसकी चाहो सहायता ले लो, अगर तुम सच्चे हो तो यह काम कर दिखाओ।'' (क़ुरआन, 2 : 23 और 10 : 38)**

जिन लोगों ने मुहम्मद (स) का इनकार किया वे इस चेलैंज में नाकाम हो गए, हालाँकि वे क़ुरआन की भाषा (अरबी) के माहिर और सुवक्ता थे। क़ुरआन का यह चेलैंज आज भी बाक़ी है।

## विरोधाभास से मुक्त

जब लोग लिखते तो वे वर्तनी (spelling) और व्याकरण (Grammar) की ग़लती ज़रूर करते हैं। उनके लेख में विरोधाभासी वाक्य, अशुद्ध तथ्य, सूचना की त्रुटि जैसी और बहुत-सी दूसरी तरह की ग़लतियाँ ज़रूर होती हैं। क़ुरआन में इस तरह का कोई विरोधाभास नहीं पाया जाता है - हालाँकि इसमें जल-चक्र, भ्रूण-विज्ञान, भू-विज्ञान, और मौसम-विज्ञान से सम्बन्धित बहुत-सी वैज्ञानिक व्याखयाओं के साथ-साथ ऐतिहासिक तथ्य और घटनाएँ या भविष्यवाणियाँ आदि बयान की गई हैं।

**''अगर यह (क़ुरआन) अल्लाह के सिवा किसी और से होता तो इसमें बहुत बेमेल बयान पाया जाता।'' (क़ुरआन, 4 : 82)**

क्या इसे मुहम्मद (स) नही लिख सकते थे ? पैग़म्बर मुहम्मद (स) को इतिहास में निरक्षर के रूप में जाना जाता है वे पढ़-लिख नहीं सकते थे। आप (स)ने किसी भी क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। इसलिए वे न तो वैज्ञानिक और ऐतिहासिक क्षेत्र में परिशुद्धता ला सकते थे और न ही इस महान पुस्तक में साहित्यिक सुन्दरता पैदा कर सकते थे। पूर्वजों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक लम्बे-लम्बे बिल्कुल दुरुस्त क़िस्से और उनकी सभ्यताओं का बयान इस बात का संकेत है कि इस क़ुरआन का लेखक इनसान हो ही नहीं सकता बल्कि वह लेखक इनसान से बहुत उच्छ और महान है।

**'' यह क़ुरआन वह चीज़ नहीं है जो अल्लाह की प्रकाशना और शिक्षा के बिना रचा जा सके (क़ुरआन, 10 : 37)**